Volume-11, No. 1 Feb.-2024, pp. Hin.01-03

राष्ट्र की एकता में चार धाम यात्रा (गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ) की भूमिकाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. कविता अहलावत, असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय जखोली (रूद्रप्रयाग) उत्तराखण्ड, भारत।

परिचय–
सामान्यत देश (राज्य) एवं राष्ट्र समानार्थी शब्द के तौर पर काम में लिये जाते है। जबकि दोनों शब्दों में मूलभूत अन्तर विद्यमान है। जहाँ देश या राज्य आवश्यक भौतिक तथ्यों (जनसंख्या, निश्चित भू–भाग, सरकार, सम्प्रभुता) पर आधारित होता है वही राष्ट्र ऐसे लोगों का समूह है जो भावनात्मक रूप से एक होते हैं। अर्थात् राष्ट्र उन लोगो का समूह है जो धर्म, भाषा, रीति–रिवाज और संस्कृति जैसी समान विशेषताओं को साझा करते है। आगे चलकर राष्ट्र शब्द से ही विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद शब्द प्रचलन में आया।
मुख्य शब्द– गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ, राष्ट्रवाद, बहुसंस्कृतिवाद

विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जिसके कारण लोग अपने देश पर संकट आने की स्थिति में अपने तन मन और धन का बलिदान करने से भी पीछे नहीं हटते है। **ब्लशंली** के अनुसार राष्ट्रीयता मनुष्यों का वह समूह है जो समान उत्पत्ति, समान जाति, समान हितों के कारण एकता के सूत्र में बधकर राज्य का निर्माण करता है। इस आधार पर अगर हम भारत की राष्ट्रीयता का आकलन करे तो शायद यह गलत होगा। क्योंकि भारत सांस्कृतिक देश है जिसमें अनके धर्म, भाषाएँ, रीति रिवाज, नस्ल जैसी विविधताए विद्यमान है। लेकिन इन सब सास्कृतिक विविधताओं के बावजूद भी यहाँ राष्ट्रवाद की भावना प्रबल रूप से विद्यमान है। राष्ट्रवाद की इस समान संस्कृति के सीने पर भारत में बहुसंस्कृतिवाद एवं सहअस्तित्व पाया जाता है। बहुसंस्कृतिवाद एवं सहअस्तित्व से तात्पर्य है, एक से अधिक संस्कृतियाँ तथा संख्या में बढ़ी संस्कृतियाँ अपेक्षाकृत छोटी संस्कृतियों के साथ प्रभुत्व का दावा किये बिना साथ–साथ रहती हो। इस प्रकार बहुसंस्कृतिवाद का अर्थ है अनेक संस्कृतियों का सहअस्तित्व। इससे सिद्ध होता है कि विभिन्नता और बहुलता शाश्वत है। इसी बहुसंस्कृतिवाद ही महता को स्पष्ट करते हुए चार्ल्स टेलर कहते हैं कि यदि हम अपनी विरासत में कोई योगदान नहीं दे सकते तो कम से कम इतना तो सुनिश्चित करे कि विविधता बनी रहे।

बहुसंस्कृतिवाद के बहुत बड़े विद्वान **विल किमलिका** की यह मान्यता है कि संस्कृतियों की बहुलता सामाजिक गतिशीलता के लिए न केवल आवश्यक है बल्कि एक ठोस विकल्प भी प्रस्तुत करती है। भारतीय संविधान के मूल कर्तव्यों में भी हमारी समासी संस्कृति का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि हम हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करें। अच्छे विचारों को चारों ओर से आने दो ऋग्वेद के इस कालजयी महावाक्य से अनुप्राणित सनातन भारतीय संस्कृति ने बहुसंस्कृतिवाद का अद्भूत मॉडल दुनियाँ के सामने पेश किया है। जहां फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन आदि राष्ट्रीयताओं के नाम पर युरोप अनेक राष्ट्र राज्यों में विभाजीत हो गया, वहीं भारत में गुजराती, मराठी, तेलगु, उड़ीसा, बगांली, तमिल, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी राष्ट्रीयताएँ राष्ट्र राज्यों में नही बेटी बल्कि सहअस्तित्व के साथ हजारों साल से बनी हुई है। जिस प्रकार किसी भी देश या राष्ट्र की एकता के निर्माण में बहुत से सांस्कृतिक तत्व काम करते है उसी प्रकार बहुत से बाधक तत्व राष्ट्र की एकता को चुनौती पेश करते है। भारत में प्रमुख रूप से

राष्ट्र की एकता में बाधक तत्व जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता जैसे अनेक सांस्कृतिक तत्व है। बहुत बार ऐसा होता है कि देश में भाषावाद, क्षेत्रवाद एवं साम्प्रदायिकता के आधार पर वैमनस्य फैलने लगता है, लेकिन बहुत से निर्माणकारी तत्व ऐसे समय में देश को खठित होने से बचाते है।

इसी प्रकार देश की राष्ट्रीयता को बढ़ाने में तथा राष्ट्र की एकता में बाधक तत्व क्षेत्रवाद एवं भाषावाद को कम करने में उत्तराखण्ड में अवस्थित चार धाम यात्रा का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान प्रतीत होता है।

ऐतिहासिक अवलोकन चार धाम की उत्पत्ति के संबंध में कोई निश्चित मान्यता या साक्ष्य उपलब्ध नहीं है, लेकिन स्कंदपुराण के तीर्थ प्रकरण में इसका वर्णन है, ऐसा धार्मिक विद्वानों द्वारा माना जाता है। स्कंध पुराण एवं हिन्दु धर्म गुरुओं के अनुसार चार धाम की यात्रा से पाप नष्ट हो जाते है एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

मुख्यतः चार धाम भारत के चार धार्मिक स्थलों का एक समुह है। इसकी परिधी में भारत के चारों दिशाओं के चार महत्वपूर्ण मंदिर आते है। देश की चारों दिशाएँ आर्थात् उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूर्व में पुरी एवं पश्चिम में द्वारिकापुरी। इन चारों मंदिरों को चार धाम के रूप में एक सुत्र में बाँधने (पिरोने) वाले 8 वीं सदी के धार्मिक आदि गुरू शंकराचार्य जी थे। इन्होंने इनके महत्व का प्रचार देश में किया। देश के चारों दिशाओं में स्थित ये पवित्र चारों धाम धार्मिक महत्व के साथ–साथ आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। देश की एकता एवं अखण्डता में इन धार्मिक स्थलों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन चारों धामों में से बद्रीनाथ सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ सबसे अधिक तीर्थयात्री आते हैं। इन चारों दिशाओं के अलावा हिमालय की गोद अर्थात् उत्तराखण्ड में भी चार धाम अवस्थित है, जिन्हें छोटा चार धाम या हिमालय के चार धाम के नाम से जाना जाता है। इसमें चार दिशाओं के धामों में से प्रमुख धाम बद्रीनाथ भी एक है।

भौगोलिक अवलोकनः–

हिमालय पर्वतों में स्थित चार धाम भारत के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में स्थित है। ये तीर्थ स्थल गढ़वाल मण्डल के उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग और चमोली जिलों में स्थित है। चार धामों की भौगोलिक स्थिति का विवरणः

(1) यमुनोत्री–

परम्परागत रूप से यमुनोत्री चार धाम यात्रा का पहला स्थल है। यह पवित्र मंदिर या धाम यमुना नदी के तट पर स्थित है। यह उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में समुद्रतल से 3235 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

(2) गंगोत्री–

यह उत्तरकाशी जिले में समुद्रतल से 3102 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय रेंज में स्थित है। यह गंगा नदी का उदगम स्थल है।

(3) केदारनाथ–

केदारनाथ रुद्रप्रयाग जिले में समुद्रतल से 3553 मीटर की ऊँचाई पर मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है। केदारनाथ धाम बारह ज्योतिर्लिंगों तथा पंच केदार में से भी एक है। यह धाम भगवान शिव को समर्पित है।

(4) बदरीनाथः–बदरीनाथ

उत्तराखण्ड के चमोली जिले में समुद्रतल से 3133 मीटर की ऊँचाई पर अलकनंदा नदी के किनारे स्थित है। यह धाम भगवान विष्णु को समर्पित है। स्कंद पुराण में उल्लेख है कि जो मनुष्य केदारनाथ के दर्शन किए बिना बदरीनाथ की यात्रा करता है, उसकी यात्रा निष्फल जाती है।

चार धाम यात्रा परम्परागत रूप से पश्चिम दिशा से पूर्व की ओर की जाती है। यह यात्रा पश्चिम में यमुनोत्री से शुरू होकर गंगोत्री तथा गंगोत्री के बाद केदारनाथ एवं अंत में बदरीनाथ तक की जाती है।

अगर हम तिर्थयात्रियों का अध्ययन करें तो पता चलता है कि यहाँ आने वाले अधिकतर यात्री व पर्यटक दक्षिण तथा पश्चिम मध्य भारतीय राज्यों से है। यह धार्मिक यात्रा क्षेत्रवाद एवं भाषावाद के भेदभाव को कम करती है तथा स्थानीय उत्तराखण्ड निवासियों का विभिन्न राज्यों के भाषा भाषी व्यक्तियों से सम्पर्क हो पाता है। यह व्यक्ति से व्यक्ति का सम्पर्क राष्ट्र की एकता में विभिन्न पुस्तकों एवं संदेशों से बढ़कर है।

यहाँ बुर्जुग यात्री धार्मिक भावना से यात्रा करते है, वहीं नौजवान यात्री पर्यटन के उद्देश्य से भी यात्रा करते है। विभिन्न तरह के वैमनस्य की भावना देश में तब फैलती है जब विकास की दौड़ में कोई क्षेत्र

पिछे छूट जाता है। इस तरह भी यह चार धाम यात्रा बड़ी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस क्षेत्र के विकास एवं आर्थिक उपार्जन में चार धाम यात्रा का बडा योगदान है। पर्यटन विभाग के आँकड़ो से भी यह साफतौर पर जाहिर है कि इस यात्रा में सबसे ज्यादा शामिल होने वाले दर्शनार्थी हरियाणावासी, मराठावासी, कन्नड़वासी, तमिलवासी, बग्लांवासी, मारवाडवासी, पजांबीवासी, कठियावाड़ीवासी इत्यादि प्रदेशों के है। अतः कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड में स्थित चार धाम यात्रा भाषा एवं क्षेत्र पर आधारित वैमनस्य को कम करती है और देश की सांस्कृतिक राष्ट्रीय एकता में योगदान देती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. जोशी महेश्वर प्रसाद, 'चार धाम यात्रा का मिथक एवं यर्थात देहरादून, समय साक्ष्य प्रकाशन, 2023 बघेल, डॉ० विरेन्द्र सिंह, भारत के चार धाम पलकक्ड़ (केरल), पिशू पब्लिशिंग हाउस, 2022
2. उनियाल, हेमा, ''केदारखण्ड (गढवाल धर्म, संस्कृति, वास्तशिल्प एवं पर्यटन), उत्तरा बुक्स पब्लिकेशन 2021
3. सिंह, राखी, ''बहुसंस्कृतिवाद एवं सामाजिक न्याय', जयपुर, रावत पब्लिकेशन, 2014
4. पूजा–शोभिता, दत्त–पूर्णिमा, सुरजन–तरूशिखा, सिंह वैष्णवी, कौर–नानकी, ''भरतीय संस्कृति सभी के लिए, नई दिल्ली, स्पिकिंग दाइगर पब्लिशर, 2023
5. सिंघवी, डॉ० लक्ष्मीमल्ल, 'भारत की राष्ट्रीय एकता', नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन 2011
6. सिंह प्रो० आनन्दी, ''भारत की राष्ट्रीय एकता और शिक्षा, जोधपुर (राजस्थान), शुभदा प्रकाशन, 2014
7. राय, बाबू गुलाब, 'भारतीय संस्कृति की रूपरेखा', नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, 2018
8. जैन, कला एवं जैन, आर० के० (2020) ''समकालीन राजनीतिक सिद्धांत', दिल्ली, आरोही पब्लिकेशन ।

Website

9. hi/ Wikipedia. Org/wiki
10. https:// www.drishtiias.com>hindi
11. https:// www. amarujala. Com>religion
12. https:// www.jagran.com>spiritual
13. https://en. Wikipedia.org>chas-dham